RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-04
April -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

सूक्ष्मशरीर का एक दार्शनिक विवेचन

अर्पिता सिंह

शोध छात्रा, संस्कृत विभाग वीर बहादुर सिंह पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालय, जौनपुर

भूमिका–

सृष्टि सम्बन्धी विचार सम्पूर्ण जगत् का एक गहन विषय है। इस सन्दर्भ में दार्शनिक, संसार को पॉच तत्वों या भूतों से निर्मित बताते है। अद्वैतवाद का प्रतिष्ठापक शाङ्करवेदान्त केवल एकमात्र ब्रह्म की सत्ता स्वीकार करता है। उसके अनुसार, ब्रह्म के अतिरिक्त कोई और वस्तु है ही नहीं– 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या'। यही ईश्वर (ब्रह्म) जगत का उपादान एवं निमित्त दोनों कारण है। वह अपनी चैतन्य की प्रधानता से उपादान कारण होता है। उस तमः प्रधान एवं विक्षेप –शक्ति से युक्त अज्ञान से उपहित चैतन्य (ईश्वर) से ही क्रमशः पञ्चमहाभूतों की उत्पत्ति होती है, अर्थात् उस ईश्वर से सर्वप्रथम आकाश उत्पन्न होता है, आकाश से वायु, वायु से अग्नि, अग्नि से जल तथा जल से पृथिवी उत्पन्न होती है।

'तमः प्रधानविक्षेपशक्तिमदज्ञानोपहितचैतन्यादाकाशः
आकाशद्वार्युर्वायोरग्निरग्नेरापोऽद्भ्यः पृथिवी चोत्पद्यते।'
(वेदान्तसार/19)

यही बात तैत्तिरीयोपनिषद् से भी प्रमाणित होती है –

'सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म। तस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः।
आकाशाद्वायुः। वायोरग्निः। अग्नेरापः। अद्भ्यः पृथिवी।।
(तैतिरीयोपनिषद्/2/1)

सूक्ष्मशरीर का दार्शनिक विवेचन–

पञ्चमहाभूतों– आकाश, वायु, तेज, जल, पृथिवी से ही सूक्ष्मशरीर की उत्पत्ति होती है सूक्ष्मशरीर सत्रह अवयव वाले होते हैं और लिङ्गशरीर कहे जाते हैं। ये सत्रह अवयव है – पञ्च ज्ञानेन्द्रियॉ, बुद्धि और मन, पञ्च कर्मेन्द्रियॉ तथा पञ्च वायु। ये सत्रह अवयव ही सत्रह लिङ्ग कहलाते हैं–

लिंग्यन्ते ज्ञाप्यन्ते प्रत्यगात्मसद्भाव एभिरिति लिङ्गानि।
तानि लिङ्गान्येव लिङ्गशरीराणि।

अर्थात्' –

जिसके द्वारा प्रत्यागात्मा के अस्तित्व का ज्ञापन हो उसे लिङ्गशरीर कहते है। जैसा कि शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है –

'मुख्यं तु सप्तदशकं प्रथितं हि लिङ्गम्।'

सांख्यदर्शन में भी सूक्ष्मशरीर का अस्तित्व स्वीकार किया गया है –

पूर्वोत्पन्नमसक्तं नियतं महदादिसूक्ष्मपर्यन्तम्।
संसरति निरूपभोगं भावैरधिवासितं लिङ्गम्।।
चित्रं यथाऽश्रयमृते स्थाण्वादिभ्यो विना यथा छाया।
तद्वद्विना विशेषैर्न तिष्ठति निराश्रयं लिङ्गम्।।
(सांख्यकारिका –40,41)

पञ्च ज्ञानेन्द्रियॉ – श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, जिह्वा, घ्राण। ये सभी ज्ञान के साधन होते है। इनके विषय क्रमशः– शब्द, स्पर्श, रूप, रस तथा गन्ध होते हैं।

तर्कसंग्रह में भी 24 गुणों के अन्तर्गत इनका विवरण इस प्रकार आया है–

श्रोत्रग्राह्यो गुणः शब्दः। त्वगिन्द्रियमात्रग्राह्यो गुणः स्पर्शः।
चक्षुर्मात्रग्राह्यो गुणो रूपम्। रसनाग्राह्यो गुणो रसः। घ्राणग्राह्यो गुणो गन्ध।
(तर्कसंग्रह–गुणलक्षणप्रकरण)

बुद्धि और मन– शब्दादि बाह्य विषयों का ज्ञान कराने वाली श्रोत्रादि इन्द्रियॉ बाह्य इंन्द्रियॉ कहलाती हैं। इनके विपरित आन्तरिक संकल्प– विकल्प, अहंकार, निश्चय आदि वृत्तियों की कारणभूत इन्द्रियों को अन्तरिन्द्रिय या अन्तःकरण कहते है। इनमें निश्चय करने वाली वृत्ति बुद्धि तथा संकल्प करने वाली वृत्ति मन है–

बुद्धिर्नाम निश्चयात्मिकान्तः करणवृत्तिः।
मनो नाम संकल्प विकल्पात्मिकाऽन्तः करणवृत्तिः।।

पञ्च कर्मेन्द्रियॉ– कर्म साधन इन्द्रियॉ कर्मेन्द्रियॉ कही जाती है। कर्मेन्द्रियों के नाम हैं– वाक् (वाणी), पाणि (हाथ), पाद (पैर), पायु (गुदा), उपस्थ (जननेन्द्रिय)। इनके विषय क्रमशः वचन्, आदान्, विहरण्, उत्सर्ग और आनन्द लेना है।

पञ्च वायु– प्राण, अपान, व्यान, उदान, तथा समान ये पॉच वायु हैं ये क्रमशः हृदय, गुदाभाग, सर्वशरीर , कण्ठ प्रदेश एवं रस रूधिर में रहने वाली ये पञ्च वायु है।

सांख्यमतानुयायी क्रिया के भेद से अन्य पञ्च वायु को भी स्वीकार करते हैं –

उद्गारे नाग आख्यातः, कूर्म उन्मीलते स्मृतः।
कृकलः क्षुत्करो ज्ञेयो, देवदत्तो विजृम्भणे।।
न जहाति मृतं चापि, सर्वव्यापी धनञ्जयः।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

निष्कर्ष–

इस प्रकार त्रिविध कोशो (विज्ञानमयकोश, मनोमयकोश, प्राणमयकोश) की उत्पत्ति इन सप्तदश अवयवों से होती है। इन कोशों के मध्य में विज्ञानमयकोश (बुद्धि+ज्ञानेन्द्रिय) ज्ञानशक्ति से युक्त और कर्तृरूप है। मनोमयकोश (मन+ज्ञानेन्द्रिय) इच्छाशक्ति से युक्त और करणरूप है। प्राणमयकोश (पञ्च कर्मेन्द्रिय+ पञ्च वायु) क्रियाशक्ति से युक्त और कार्य रूप हैं इनका यह विभाजन इनकी अपनी–अपनी योग्यता के कारण है, ऐसा शास्त्र वर्णन करते है। ये तीनों कोश मिलकर सूक्ष्मशरीर कहलाते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. वेदान्तसार – सदानन्द प्रणीत
2. तैत्तिरीयोपनिषद् – कृष्ण यजुर्वेद
3. सांख्यकारिका – ईश्वरकृष्ण प्रणीत
4. तर्कसंग्रह – श्री अन्नम्भट्ट प्रणीत
5. भारतीय दर्शन

RRIJM 2015, All Rights Reserved